ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

हरिहर काका

कक्षा - दसवीं

विषय – हिंदी
पाठ : ५
पाठ का नाम : हरिहर काका
PPT-5

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

19.इधर ठाकुरबारी का दृश्य भी बदल गया----------बुढ़ापे का दुख बिताए नहीं बीतेगा!

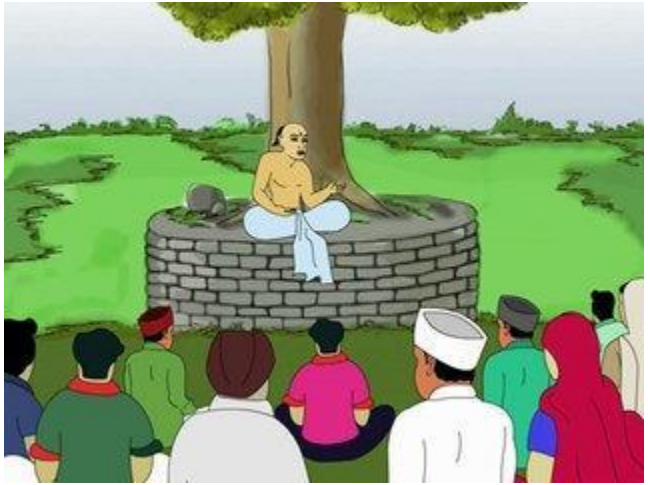

खूँखार - अत्यधिक क्रूर / निर्दयी
प्रतिक्रिया - प्रतिकार / बदला
व्यक्त - स्पष्ट / साफ़
अपेक्षा - तुलना
जायदाद हीन - धन-दौलत के बिना
चिकनी-चुपड़ी बातें - खुशामद भरी
बाने - वेश में
कुकर्मी - बुरे काम करने वाले
छल, बल, कल - युक्ति / बुद्धि
अर्जित - इकट्ठा
घृणित - बुरा
माध्यम - सहारा
दूध की मक्खी - तुच्छ समझना / बेकार समझना

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि इतना सब कुछ हो जाने के बाद देव-स्थान का दृश्य ही बदल गया था। वहाँ पर पुजारी और महंत के स्थान पर बहुत सारे एक से बढ़कर एक अत्यधिक क्रूर और निर्दयी लोग आ गए थे। उन्हें देखने मात्र से ही किसी को भी डर लग सकता था। उनके डर से गाँव के बच्चों ने तो देव-स्थान जाना ही छोड़ दिया था। हरि हर काका के विषय को लेकर पहले ही गाँव के लोग दो भागों में बाँट गए थे, अब हरिहर काका के अपहरण और उनको छुड़ाने की घटना के बारे में बातें होने लगी थी। लोग अपनी-अपनी राय देने लगे थे। लेखक कहते हैं कि हरिहर काका के साथ जो कुछ भी हुआ था उससे हरिहर काका एक सीधे-सादे और भोले किसान की तुलना में चालाक और बुद्धिमान हो गए थे। उन्हें अब सब कुछ समझ में आने लगा था कि उनके भाइयों का अचानक से उनके प्रति जो व्यवहार परिवर्तन हो गया था, उनके लिए जो आदर-सम्मान और सुरक्षा वे प्रदान कर रहे थे, वह उनका कोई सगे भाइयों का प्यार नहीं था बल्कि वे सब कुछ उनकी धन-दौलत के कारण कर रहे हैं, नहीं तो वे हरिहर काका को पूछते तक नहीं। लेखक कहता है कि उसके गाँव में धन-दौलत के बिना कोई अपने भाई को पूछता भी नहीं है। हरिहर काका सब कुछ बहुत अच्छी तरह से समझ गए थे। महंत की खुशामद भरी बातों के अंदर छुपी सच्चाई को भी वह जान गए थे। हरिहर काका जान गए थे कि महंत भगवान के नाम पर अपना और अपने साथ काम करने वाले साधु-संतों का पेट पालता है। उसे धर्म और परमार्थ से कोई मतलब नहीं है बल्कि वह तो अपने स्वार्थ के लिए साधु होने और भगवान की पूजा-अर्चना करने का नाटक करता है।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि हरिहर काका यह अच्छी तरह से समझ गए थे कि महंत, पुजारी और उनके अन्य सहयोगी साधु नहीं हैं बल्कि वे तो साधु के वेश में बहुत ही लालची और बुरे काम करने वाले लोग हैं। वह अपनी योजनाओं और बुद्धि के सहारे बहुत सारा धन इकट्ठा करना चाहते हैं ताकि वे बिना मेहनत के ही आराम से अपना जीवन व्यतीत कर सकें। अपने इस तरह के बुरे कामों को छिपाने के लिए उन्होंने देव-स्थान को ही सहारा बना लिया था। क्योंकि देव-स्थान एक ऐसा स्थान होता है जिस पर सभी आँखें बंद कर के विश्वास करते हैं। इसीलिए हरिहर काका ने अपने मन-ही-मन में यह ठान लिया था कि अब वे महंत को अपने आस-पास भी नहीं आने देंगे और उसकी किसी भी बात पर ध्यान नहीं देंगे। इसके साथ ही हरिहर काका ने यह भी तय कर लिया था कि वे अपने जीते-जी अपनी धन-दौलत अपने भाइयों को भी नहीं देंगे क्योंकि वे जानते थे कि अगर उन्होंने ऐसा कुछ किया तो सब उनको बेकार समझ कर कहीं फेंक देंगे। उनका कोई ध्यान नहीं रखेगा। उनके लिए बुढ़ापा बहुत ही ज्यादा कष्टों वाला हो जाएगा।

20.लेकिन हरिहर काका सोच कुछ----------लोग उसके पाँव पखारते होते।

गिद्ध-दृष्टि - तेज़ नज़र
मँडरा - घूमते
समक्ष - सामने
नकार - मना करना
स्वतः - अपने आप

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

वरन - सामना
अखरने - बुरा लगना
दुर्गति - बुरी हालत
पखारना - धोना

लेखक कहते हैं कि हरिहर काका जो सोच रहे थे हालात बिलकुल उसके उलटे हो रहे थे। जब से हरिहर काका देव-स्थान से वापिस घर आए थे, उसी दिन से ही हरिहर काका के भाई और उनके दूसरे नाते-रिश्तेदार सभी यही सोच रहे थे कि हरिहर काका को क़ानूनी तरीके से उनकी जायदाद को उनके भतीजों के नाम कर देना चाहिए। क्योंकि जब तक हरिहर काका ऐसा नहीं करेंगे तब तक महंत की तेज़ नज़र उन पर टिकी रहेगी। सभी चाहते थे कि हरिहर काका उनके ऊपर घूमते हुए खतरे को उनकी जायदाद उनके भतीजों के नाम करके हटा दें क्योंकि उनके पास यही एक रास्ता बच गया है, जिससे वे अपनी जान बचा सकते हैं।सुबह, दोपहर, शाम यहाँ तक की रात में भी इसी के बारे में बात होती थी। लेकिन हरिहर काका इस बात को मानने से बिलकुल ही मना कर देते थे और कहते थे कि उनके मर जाने के बाद तो उनकी जायदाद खुद ही उनके परिवार को मिल जाएगी तो लिखने से या ना लिखने से क्या फर्क पड़ेगा। महंत ने जो जबरदस्ती उनके अँगूठे के निशान लिए हैं उसके लिए तो उन्होंने मुकदमा किया हुआ है, तो घबराने की कोई बात नहीं। लेखक कहते हैं कि जब हरिहर काका के भाई हरिहर काका को समझाते-समझाते थक गए, तो उन्होंने हरिहर काका को डाँटना और उन पर दवाब डालना शुरू कर दिया। लेकिन हरिहर काका इस तरह भी नहीं मानें। उन्होंने स्पष्ट और साफ़-साफ़ कह दिया था कि वे अपने जीते-जी ऐसा नहीं करेंगे।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि एक रात हरिहर काका के भाइयों ने भी उसी तरह का व्यवहार करना शुरू कर दिया जैसा महंत और उनके सहयोगियों ने किया था। हरिहर काका को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ क्योंकि उनके वही सगे भाई जो उनकी सेवा और सुरक्षा के लिए दिन-रात तैयार रहते थे, उन्हें कभी अपने से अलग नहीं मानते थे, उनके साथ ही जागते और सोते थे, वही भाई आज हरिहर काका के सामने हथियार ले कर खड़े थे और उन्हें धमकाते हुए कह रहे थे कि ख़ुशी-ख़ुशी कागज़ पर जहाँ-जहाँ जरुरत है, वहाँ-वहाँ अँगूठे के निशान लगते जाओ, नहीं तो वे उन्हें मार कर वहीँ घर के अंदर ही गाड़ देंगे और गाँव के लोगो को इस बारे में कोई सूचना भी नहीं मिलेगी। लेखक कहते हैं कि जब हरिहर काका के भाई हरिहर काका को धमका रहे थे तो वे बिलकुल नहीं डरे, अगर वे हरिहर काका के अपहरण से पहले उन्हें डराते तो शायद वे डर जाते। क्योंकि जब मनुष्य को ज्ञान नहीं होता तभी वह मृत्यु से डरता है। परन्तु जब मनुष्य को ज्ञान हो जाता है तब वह जरूरत पड़ने पर मृत्यु का सामना करने के लिए भी तैयार हो जाता है। हरिहर काका ने सोच लिया था कि उनके भाई उन्हें एक बार ही मार दें तो सही है, लेकिन वे जमीन उनके नाम लिख कर रमेसर की विधवा की तरह अपनी पूरी जिंदगी घुट-घुट कर नहीं मरना चाहते, यह उन्हें ठीक नहीं लग रहा था। रमेसर की विधवा को अपनी बातों में लाकर रमेसर के भाइयों ने उसकी जमीन अपने नाम लिखवा दी थी। पहले-पहले तो रमेसर की विधवा का बहुत आदर-सम्मान होता था, परन्तु बुढ़ापे में रमेसर के परिवार वालों को उसे दो वक्त का खाना देना भी बुरा लगने लगा था। अंत में तो बेचारी की हालत इतनी ख़राब हुई कि गाँव के लोग भी उस पर तरस करने लगे थे। हरिहर काका अपनी इस तरह की हालत से अच्छा एक बार ही मर जाना सही समझते थे। उन्हें लगता था कि अगर रमेसर की विधवा अपनी जमीन रमेसर के परिवार को नहीं लिखती तो अंत तक सभी उसके पाँव धोते अर्थात उसकी सेवा करते।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

21.हरिहर काका गुस्से में खड़े हो गए---------- रिश्ते के शेष लोग भी फ़रार हो गए थे....।

तनिक - थोड़े भी
हाथापाई - मारपीट
प्रतिकार - विरोध
प्रहार – हमला
चेत - ध्यान
तत्क्षण - उसी पल
तत्काल - उसी समय
तत्परता - दक्षता / निपूर्णता
फुरती – तेज़ी
बदतर - अत्यधिक बुरा
बरामद - हासिल करना
फ़रार - भाग जाना

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

जब हरिहर काका के भाई हरिहर काका को धमका रहे थे, तब हरिहर काका गुस्से में खड़े होकर बोले कि वे अकेले ही हैं और उनके भाई इतने सारे हैं। अगर वे उन्हें मारना चाहते हैं तो मार दें। हरिहर काका ने साफ़ कह दिया कि वे मर जाएँगे परन्तु जीते-जी वे अपनी जमीन का एक टुकड़ा भी उनके नाम नहीं लिखेंगे, क्योंकि अब हरिहर काका को अपने भाई, देव-स्थान के महंत और पुजारी से थोड़े भी काम नहीं लग रहे थे। हरिहर काका के भाई हरिहर काका को धमका रहे थे कि उन्हें अपनी जमीन भाइयों के नाम लिखनी ही पड़ेगी फिर चाहे वे हँस कर लिखे या रो कर। हरिहर काका के साथ अब उनके भाइयों की मारपीट शुरू हो गई। हरिहर काका अब उस घर में नहीं रहना चाहते थे, वे उस घर से बाहर गाँव में भागना चाहते थे परन्तु उनके भाइयों ने उन्हें बहुत मजबूती से पकड़ कर रखा था। अगर हरिहर काका उनका विरोध करते तो वे हरिहर काका पर हमला भी करने लग गए थे।लेखक कहते हैं कि जब हरिहर काका अपने भाइयों का मुकाबला नहीं कर पा रहे थे, तो उन्होंने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर अपनी मदद के लिए गाँव वालों को आवाज लगाना शुरू कर दिया। तब उनके भाइयों को ध्यान आया कि उन्होंने तो हरिहर काका का मुँह बंद ही नहीं किया जो उन्हें सबसे पहले करना चाहिए था। उन्होंने उसी पल हरिहर काका को जमीन पर गाँव में पहुँच गई थी। आस-पड़ोस के लोग हरिहर काका के बरामदे में इकट्ठे होने लग गए थे। देव-स्थान के समर्थकों ने उसी समय वह बात महंत जी के कानों तक पहुँचा दी। लेकिन वहाँ उपस्थित हरिहर काका के परिवार और रिश्ते-नाते के लोग जब तक गाँव वालों को समझाते की यह सब उनके परिवार का आपसी मामला है, वे सभी इससे दूर रहें, तब तक महंत जी बड़ी ही दक्षता और तेज़ी से वहाँ पुलिस की जीप के साथ वहाँ आ गए। वे वहाँ इतनी जल्दी पहुंचे थे जितनी जल्दी हरिहर काका के भाई, हरिहर काका के अपहरण के दौरान भी नहीं पहुँचे थे।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि हरिहर काका के परिवार वाले लोगों को ये कह कर भगा रहे थे कि यह उनके घर का आपसी मामला है, परन्तु जब महंत पुलिस को ले कर आया तो वह कोई आपसी मामला नहीं रह गया था। पुलिस ने पुरे घर की अच्छे से तलाशी लेना शुरू कर दिया। फिर घर के अंदर से हरिहर काका को इतनी बुरी हालत में हासिल किया गया जितनी बुरी हालत उनकी देव-स्थान में भी नहीं हुई थी । जब हरिहर काका को बंधन से खोला गया और उन्हें लगा कि अब वे पुलिस के साथ सुरक्षित हैं, तब उन्होंने बोलना शुरू किया कि उनके भाइयों ने उनके साथ बहुत ही ज्यादा बुरा व्यवहार किया है, जबरदस्ती बहुत से कागजों पर उनके अँगूठे के निशान ले लिए है, उन्हें बहुत ज्यादा मारा-पीटा है, अब ऐसा कोई भी बुरा व्यवहार बाकी नहीं रहा है जो उनके साथ न हुआ हो, हरिहर काका कहते कि अगर पुलिस समय पर नहीं आती तो शायद उनके भाई उन्हें मार ही डालते। लेखक कहते हैं कि हरिहर काका की पीठ, माथे और पाँवों पर कई जगह ज़ख्म के निशान आसानी से देखे जा सकते थे। हरिहर काका बहुत ही घबराए हुए लग रहे थे। वे काँप रहे थे और बोलते-बोलते अचानक वे बेहोश हो गए। उनके मुँह पर पानी की छींटे डालकर उन्हें होश में लाया गया। पुलिस के आते ही हरिहर काका के भाई और भतीजे सभी भाग गए थे। पुलिस ने हरिहर काका के दो रिश्तेदारों को पकड़ा था। बाकी के रिश्तेदार भी भाग गए थे।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

22.हरिहर काका के साथ घटी घटनाओं ----------नेता जी भी निराश हो कर लौट आते हैं।

पुनः - फिर से
धर दबोचना - पकड़ लेना
नेपथ्य - रंग-मंच के पीछे की जगह
पैरवी - खुशामद / अनुगमन
वास्तविक - असल में
सतर्क - सावधान
सदभाव - अच्छा व्यवहार
प्रयत्नशील - प्रयास में लगे रहना
वशिष्ट - ख़ास
प्रस्ताव - योजना

लेखक कहते हैं कि हरिहर काका के साथ अब तक जितनी भी घटनाएँ घटी ये घटना उनमें से अब तक की सबसे अंतिम घटना थी। इस घटना के बाद हरिहर काका अपने परिवार से एकदम अलग रहने लगे थे। उन्हें उनकी सुरक्षा के लिए चार राइफल धारी पुलिस के जवान मिले थे। आश्चर्य की बात तो यह है कि इसके लिए उनके भाइयों और महंत की ओर से काफ़ी प्रयास किए गए थे। असल में भाइयों को चिंता थी कि हरिहर काका अकेले रहने लगेंगे, तो देव-स्थान के महंत-पुजारी फिर से हरिहर काका को बहला-फुसला कर ले जाएँगे और जमीन देव-स्थान के नाम करवा लेंगे।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

और यही चिंता महंत जी को भी थी कि हरिहर काका को अकेला और असुरक्षित पा, उनके भाई फिर से उन्हें पकड़ कर मारेंगे और जमीन को अपने नाम करवा लेंगे। इसीलिए जब हरिहर काका ने अपनी सुरक्षा के लिए पुलिस की माँग की तब सामने ना आकर हरिहर काका के भाई और महंत दोनों ने पीछे ही रह कर बहुत खुशामद और पैसा खर्च कर के हरिहर काका की सुरक्षा के लिए सहायता की थी। यह उनकी सहायता का ही परिणाम था कि एक व्यक्ति की सुरक्षा के लिए गाँव में पुलिस के चार जवान तैनात कर दिए गए थे। लेखक कहते हैं कि उसे लगता है हरिहर काका भले ही पुलिस की सुरक्षा में रह रहे हों, परन्तु असल में जो सुरक्षा हरिहर काका को मिल रही है वह देव-स्थान और उनके भाइयों की ही मिल रही है। देव-स्थान के साधु-संत और हरिहर काका के भाई इस बात का बहुत अच्छे से ध्यान रख रहे हैं कि उनमें से कोई या गाँव का भी, कोई भी व्यक्ति हरिहर काका को कोई भी नुकसान ना पहुँचा पाए। इसके साथ ही दोनों पक्ष, हरिहर काका के भाई और देव-स्थान के साधु-संत अपना बनावटी व्यवहार और अच्छा होने का ढोंग हरिहर काका के सामने लगातार करके उन्हें अपनी-अपनी ओर लेने का पूरा प्रयास कर रहे थे। लेखक कहते हैं कि उसके गाँव में एक नेता जी थे, जो न तो कोई नौकरी करते थे और न ही उनकी कोई खेती-गृहस्थी थी, उसके बाद भी वे साल के बारहों महीने मौज करते थे। इसका कारण था कि उनके पास राजनीति की जादुई छड़ी थी। नेता जी का ध्यान हरिहर काका की ओर गया। वे बिना समय गवाए कुछ ख़ास लोगों को अपने साथ ले कर हरिहर काका के पास पहुँच गए और उन्हें एक योजना बताई कि वे अपनी जमीन पर 'हरिहर उच्च विद्यालय' नाम से एक हाई स्कूल खुलवा दें। इससे उनका नाम अमर हो जाएगा, सदियों तक सभी उनको स्कूल के नाम से याद रखेंगे। इससे उनकी जमीन का सही उपयोग भी हो जाएगा और गाँव के विकास के लिए एक स्कूल भी मिल जाएगा। लेकिन हरिहर काका के ऊपर तो अब कोई भी दूसरा रंग चढ़ने वाला नहीं था। नेता जी को भी निराश हो कर लौट जाना पड़ा।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

23.इन दिनों गाँव की चर्चाओं के केन्द्र हैं हरिहर काका---------- दोनों जून उसका भोग लगा रहे हैं।

विचारणीय - विचार करने योग्य
चर्चनीय - चर्चा के योग्य
सम्भावना - हो सकने का भाव
उगल - बोलना
समाधान - हल
आशंका - संदेह / शक
समूचे – पुरे
अफ़सोस - दुःख
हस्तगत - अपने हाथों में
रहस्यात्मक - राज से भरी हुई
भयावनी - डरावनी
आच्छादित - छाया हुआ

लेखक कहते हैं कि अब गाँव में हरिहर काका के ऊपर ही सारी बातें होने लगी थी। आँगन, खेत, खलियान, अलाव, बगीचे, बरगद - हर जगह उनकी ही बातें होती थी। उनकी घटना की तरह कोई और घटना नहीं थी जिस पर विचार और बातें की जा सकें। गाँव में हर दिन कुछ-न-कुछ घटता ही रहता था, लेकिन हरिहर काका की घटना के सामने कोई भी घटना टिक नहीं पाती थी, लोग बस हरिहर काका की घटना के बारे में ही बात करते नज़र आते थे। गाँव में जहाँ कहीं भी लोगों के बीच हरिहर काका के बारे में बात शुरू होती थी, तो फिर उसका कोई अंत नहीं होता था।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लोग तरह-तरह की हो सकने वाली बातों पर चर्चा करते रहते थे जैसे - राम जाने क्या होगा। दोनों ओर के लोगों ने अँगूठे के निशान ले लिए हैं। लेकिन हरिहर काका ने अपना ब्यान दर्ज कराया है कि वे दोनों लोगों में से किसी को भी अपना उत्तराधिकारी नहीं मानते हैं। वे दोनों को ही अपनी जमीन नहीं देना चाहते। दोनों ओर के लोगों ने जबरदस्ती उनके अँगूठे के निशान लिए हैं। अब इस तरह की स्थिति में उनके बाद उनकी जायदाद का हकदार कौन होगा। इस तरह की बातें हमेशा ही सुनने को मिलती थी। लेखक कहते हैं कि हरिहर काका के विषय में बात करते-करते लोगों के बीच बहस छिड़ जाती थी। उत्तराधिकारी के कानून पर जो जितना जानता था, उससे दस गुना ज्यादा ही बोलता था। उसके बाद भी किसी के पास कोई हल नहीं निकलता था। बात कभी ख़त्म नहीं होती थी, लोगों का संदेह वैसा ही बना रहता था। लेकिन लोग अपने संदेह को एक ओर रख कर अपना-अपना पक्ष लेना शुरू कर देते थे। कोई कहता की उत्तराधिकार ठाकुरबारी को मिलेगा तो सभी का भला होगा। कोई कहता उत्तराधिकार हरिहर काका के भाइयों को मिलना चाहिए क्योंकि यह उनका हक़ है। देव-स्थान वालों ने कब क्या कहा, हरिहर काका के भाइयों ने कब क्या कहा, यह खबर बिजली की तरह एक ही बार में पुरे गाँव में फैल जाती थी। खबर कितनी झूठी है-कितनी सच्ची है इस बात पर कोई ध्यान नहीं देता था। जिसको जो भी बात पाता चलती थी वह बिना सोचे समझे बात को बड़ा-चढ़ा कर आगे पहुँचा देता था। लेखक कहते हैं कि हरिहर काका से जुड़ी बहुत सी ख़बरें गाँव में फैल रही थी। एक खबर थी कि महंत जी और हरिहर काका के भाई इस बात के लिए दुःख मना रहे हैं कि उन्होंने अगर हरिहर काका के अँगूठे के निशान लेने के बाद उन्हें ख़त्म कर दिया होता तो बात इतने आगे नहीं बढ़ती।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

दूसरी खबर यह आ रही थी कि जब हरिहर काका मरेंगे तो उनके अंतिम संस्कार को ले कर भी ठाकुरबारी के साधु-संतो और काका के भाइयों के बीच काफ़ी लड़ाई होगी। दोनों ओर के लोगों ने अंतिम संस्कार अपनी-अपनी ओर से करने का फैसला कर लिया है। इस बारे में कि लाश किसके पास रहेगी और अंतिम संस्कार कौन करेगा इसमें बहुत खून-खराबा हो सकता है। एक तीसरी खबर यह भी आ रही थी कि हरिहर काका के भाई अभी से ही हरिहर काका की जमीन को हड़पने की पूरी तैयारियाँ कर ली है। उन्होंने इलाके के मशहूर डाकू बुटन सिंह को मना लिया है और उससे बात भी कर रखी है। हरिहर काका के पंद्रह बीघे खेत में से पाँच बीघे खेत बुटन लेगा और मामले को संभाल लेगा। इससे पहले भी इस तरह के दो-तीन मामले बुटन ने निपटाए हैं। पुरे इलाके में बुटन सिंह के नाम का खौफ था। एक चौथी खबर यह भी फैल रही थी कि महंत जी ने यह फैसला कर लिया है कि जब हरिहर काका की मौत होगी तो वह देश के कोने-कोने से साधुओं और नागाओं को बुलाएँगे ताकि हरिहर काका की आत्मा को शांति मिले। लेखक कहते हैं कि ऐसा लग रहा था मानो राज़ से भरी हुई और डरावनी बातें गाँव के पुरे आसमान में फैली हुई हैं। जैसे-जैसे दिन बड़ रहे थे, वैसे-वैसे डर का माहौल बन रहा था। सभी लोग सिर्फ यही सोच रहे थे कि हरिहर काका ने अमृत तो पिया हुआ है नहीं तो मरना तो उनको एक दिन है ही। और जब वे मरेंगे तो पुरे गाँव में तूफ़ान आ जाएगा क्योंकि महंत और हरिहर काका के परिवार के बीच जमीन को ले कर लड़ाई हो जाएगी। सभी जानते थे कि उसका असर पुरे गाँव पर भी पड़ेगा। उस समय सही में क्या होने वाला है कोई सही से नहीं बता सकता था। लोगों का कहना था कि यह कोई छोटी लड़ाई नहीं है बहुत बड़ी लड़ाई है। इसीलिए गाँव के लोगों के अंदर डर तो था ही लेकिन वे उस समय का इंतज़ार भी कर रहे थे। एक ऐसे समय का इंतज़ार जिसको आना ही था उसे रोका नहीं जा सकता था।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि हरिहर काका इन सब चीजों से दूर चुप-चाप अपनी बाकी की जिंदगी काट रहे थे। हरिहर काका ने एक नौकर रख लिया था वही उन्हें खाना बना कर खिलाता था। उनके हिस्से की जमीन में जितनी फसल होती थी उससे अगर हरिहर काका चाहते तो मौज की जिंदगी बिता सकते थे। लेकिन वह तो गूँगापन का शिकार हो गए थे। कोई बात कहो, कुछ पूछो, वे किसी का कोई जवाब नहीं देते थे। खुली आँखों से बराबर आकाश को देखते रहते थे। सारे गाँव के लोग उनके बारे में बहुत कुछ बातें करते थे, लेकिन उनके पास अब कहने के लिए कोई बात नहीं बची थी।

पुलिस के जवान हरिहर काका के खर्चे पर ही खूब मौज-मस्ती से रह रहे थे। जिसका धन वह रहे उपवास, खाने वाले करें विलास अर्थात हरिहर काका के पास धन था लेकिन उनके लिए अब उसका कोई महत्व नहीं था और पुलिस वाले बिना किसी कारण से ही हरिहर काका के धन से मौज कर रहे थे। अब तक जो नहीं खाया था, दोनों वक्त उसका भोग लगा रहे थे।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow